श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्बोधन

निजी विश्वविद्यालयों से संवाद

दिनांक 10 जून, 2020 **समय प्रात : 11.30 बजे**

स्थान : राजभवन, जयपुर

सभी आमंत्रित डीम्ड एवं निजी विश्वविद्यालयों के कुलाधिपतिगण/ कुलपतिगण/निदेशक एवं अध्यक्षों का इस संवाद में अभिनन्दन!

कोविड–19 के इस संकट के दौर में हम विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा दिये जाने और उनसे लगातार संवाद किये जाने का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकोप का असर विश्व स्तर पर उच्च शिक्षा एवं शैक्षणिक गतिविधियों पर पड़ा है, इस विषम काल में जबकि सभी उच्च शिक्षण संस्थानों में अनिश्चितता एवं निराशा का दौर व्याप्त है। मेरे द्वारा इस चर्चा को किये जाने के दो मुख्य उद्देश्य हैं। पहला – कि मैं आपसे यह संवाद स्थापित कर सकूं कि आपके स्तर पर अकादमिक उत्कृष्टता के लिये क्या प्रयास किये गये एवं किस प्रकार आप अध्ययन–अध्यापन प्रवेश परीक्षा मूल्यांकन अपने स्तर पर कर पा रहे हैं और दूसरा – यह कि क्या हम विश्वविद्यालय स्तर पर सामाजिक दायित्व के क्षेत्र में इस दौर में भी कोई भूमिका अदा कर पा रहे हैं।

मेरी चिन्ता सदैव ही युवा पीढ़ी के साथ जुड़ी रहती है और यह चिन्तन निरन्तर मेरे मन में रहता है कि किस प्रकार हम इस युवा पीढ़ी का मनोबल बनाये रखें, उसे गिरने न दें और उनके मन में निराशा का भाव नहीं आने पाये। मेरा यह संवाद राज्य वित्त पोषित विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के साथ कुछ–कुछ अन्तराल से चलता रहता है। परन्तु आप सभी के साथ यह मेरा पहला संवाद है। मुझे मालूम है कि डीम्ड अथवा निजी विश्वविद्यालय होने से आपके पास संसाधन अधिक उपलब्ध रहते हैं व निर्णय लेने की स्वतंत्रता राज्य वित्त पोषित विश्वविद्यालयों की अपेक्षाकृत अधिक रहती है परन्तु साथ ही आपकी विद्यार्थियों के प्रति जवाबदेही एवं जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है।

आपकी जानकारी में होगा कि हमारे राज्य में कोविड़–19 के कारण लगभग 28 लाख छात्र–छात्राओं को अकादमिक हानि हो रही है एवं महामारी के चलते विश्वविद्यालयों में शिक्षण, प्रशिक्षण, सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक परीक्षायें प्रभावित हो रही हैं। इसको दृष्टिगत रखते हुए मेरे द्वारा दस सदस्यों की

एक टास्क फोर्स का गठन किया गया हैं। टास्क फोर्स में पांच वर्तमान एवं एक निवर्तमान कुलपति के साथ अनुभवी अधिकारी रखे गये हैं, जो अपने लम्बे शैक्षिक एवं प्रशासनिक अनुभव एवं गहन मंथन के द्वारा इस आपदा के कारण विद्यार्थियों को आने वाली परेशानियों से दूर करने का सुझाव समय–समय पर दे रही है। उस क्रम में, मैं स्वयं समय–समय पर पत्र एवं विडियों कॉन्फ्रेसिंग के द्वारा सभी कुलपतियों से संवाद रखता हूँ। सभी राज्य वित्त पोषित विश्वविद्यालय टास्क फोर्स एवं शीर्ष रेग्यूलेटरी बॉडी के द्वारा प्रदत्त अनुशंषाओं को संदर्भ बिन्दु मानकर ही पाठ्यक्रम, परीक्षा, मूल्यांकन, परिणाम एवं आगामी सत्र में प्रवेश के बारे में निर्णय ले रहे हैं।

आज के संवाद में मैं आपसे यह जानना चाहूंगा कि आपके द्वारा परीक्षा के स्थान पर छात्रों के पूर्व में प्राप्त अंकों के आधार पर प्रमोट किया जा रहा है या ऑनलाइन परीक्षा ली जा रही है। यदि ऑनलाइन परीक्षा ली जा रही है तो आपका अनुभव किस प्रकार का है। मेरे संज्ञान में लाया गया है कि निजी विश्वविद्यालयों द्वारा लगातार ऑनलाइन अध्ययन व

अध्यापन का कार्य करवाया जा रहा है। मैं जानना चाहूंगा कि क्या यह आपके स्वयं के पोर्टल पर किया जा रहा है या किसी प्रचलित सोशल मीडिया के प्लेटफार्म का उपयोग किया जा रहा है और आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप छात्रों को लाभ प्राप्त हो रहा है या नहीं। साथ ही आपने अपने अध्ययन–अध्यापन, परीक्षा एवं मूल्यांकन में कोई ऐसा अनुप्रयोग किया हो जिसके अभूतपूर्व परिणाम आये हों और जिसे आप सभी के साथ साझा करना चाहेंगे। इसी प्रकार अगर आपके विश्वविद्यालय द्वारा कोई बेस्ट प्रेक्टिस उपयोग में आई हो जोकि छात्र व समाज के लिये उपयोगी सिद्ध हो तो उसे आप अवश्य ही आज के संवाद में व्यक्त करें व सभी को बतायें।

कोविड काल में शिक्षण संस्थाओं में कई अन्य तरह की समस्यायें हमारे सामने आने वाली हैं। जैसे विद्यार्थियों के ''मूवमेंट'' नहीं होने के कारण उनके मन में निराशा का भाव, भविष्य के प्रति अनिश्चितता एवं घटते हुए रोजगार के अवसर, अध्ययन व अध्यापन के साथ–साथ सभी विश्वविद्यालयों का दायित्व इन छात्रों के मन में उत्साह जगाना एवं इनको

विश्वास दिलाना भी है कि इन विषम परिस्थितियों पर भी हम विजय प्राप्त करेंगे एवं फिर से सामान्य स्थितियों का सृजन कर आगे बढ़ेंगे। इसलिये मैं आपसे जानना चाहूंगा कि आपके विश्वविद्यालय में व्यक्तित्व विकास एवं नैतिक शिक्षा के संबंध में आपके द्वारा किस प्रकार के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। क्या आपके द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ–साथ फिट रहने के लिये भी कोई ऑनलाइन व्याख्यान दिया जा रहा है एवं उनकी मनोवैज्ञानिक काउन्सलिंग के लिये आपके द्वारा क्या कुछ प्रयास किये जा रहे हैं? **शायद इस काल में यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण बिन्दु है।**

कोविड़–19 की आपदा एक लर्निंग अवसर के रूप में देखी जा सकती है मेरा मत है कि सिर्फ ऑनलाईन शिक्षण शुरू कर देने मात्र से ही समस्या खत्म नही हो जाती है बल्कि विश्वविद्यालयों को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि वे निर्बाध ऊर्जा (uninterrupted Power) एवं इन्टरनेट सप्लाई को कैसे जारी रख सकेंगे एवं छात्र–छात्राओं को कम से कम खर्च में इन्टरनेट डेटा उपलब्ध करवा सकेगें। समय है ये सोचने

एवं तैयार रहने का कि किस प्रकार इस आगामी सत्र में उन छात्र–छात्राओं को एडमिशन दे पायेंगे जो अब तक या तो विदेश में पढ रहे थे या विदेश जाने की तैयारी में थे, साथ ही विश्वविद्यालय को उन सभी विद्यार्थियों को भी एडमिशन देना होगा जो इटली, स्पेन, जर्मनी, इग्लैण्ड, आदि देशों से भारत आकर पढना चाहेंगे। हमें इस पर पूरी तैयारी रखनी होगी एवं इसके लिये सभी संसाधन पहले ही जुटा लेने होंगे।

इसके साथ मेरा आप सभी से सविनय यह भी आग्रह रहेगा कि इन विषम परिस्थितियों में अगर हम विश्वविद्यालय की ओर से कोई कार्य सामाजिक दायित्व के अन्तर्गत करें जैसे गांव गोद लें, विद्यार्थियों और ग्रामीणों में जागरूकता जगायें, कोविड संबंधी कोई आवश्यकता हो तो उसे पूरा करें, जल प्रबंधन एवं ऊर्जा संचयन के क्षेत्र में कोई कार्य करें। गांव में शिक्षा के प्रचार प्रसार के लिये कार्य करें। कृषि संबंधी नई तकनीकों को किसानों तक विद्यार्थियों द्वारा पहुंचायें, पशुपालन की नई तकनीकों को पशुपालकों तक विश्वविद्यालय के माध्यम से पहुंचायें, आईटी क्रान्ति के बारे में ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीणों व

विद्यार्थियों को जागरूक करें एवं आज की आवश्यकता के रूप में उन तक इस तकनीक की महत्ता एवं आवश्यकता के बारे में जानकारी दिलवायें, तो हम इस राज्य एवं राष्ट्र उत्थान में अपना सहयोग दे पायेंगे।

इस क्रम में मेरा यही सुझाव है कि यह वह समय है कि जब हम सब एक जुट होकर उपलब्ध संसाधनों का समुचित उपयोग कर सामाजिक एवं शैक्षणिक उत्थान के कार्य में आने वाले परिवर्तनों का अध्ययन कर आने वाली चुनौतियों का दृढ़ता एवं योजनाबद्व तरीके से सामना करें।

हम राज्य में कोविड–19 द्वारा उत्पन्न हुई परिस्थितियों में फिर से शैक्षणिक माहौल बना पायेंगे जिससे राज्य का छात्र लाभान्वित हो एवं संयुक्त रूप में सभी कुलपति एवं शिक्षाविदों को साथ लेकर सफलतापूर्वक इस संकट के दौर से निकल जायेंगे। ऐसा मेरा विश्वास है एवं यही अपेक्षा आपसे मेरी सदैव रहेगी।

इन्हीं शुभकामनाओं के साथ, जय हिन्द!